द्रव्यज्ञानक्रियात्मिका त्रिगुणमयी प्रकृति भगवान् की शक्ति

“सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।”

(श्रीमद्भगवद्गीता १४.०५),

“मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते॥”

(श्रीमद्भगवद्गीता ०९.१०),

“प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः। भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात्॥”

(श्रीमद्भगवद्गीता ०९.०८),

“मम योनिर्महद् ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्। सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत॥”

(श्रीमद्भगवद्गीता १४.०३),

“परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥”

(श्रीमद्भगवद्गीता ०८.२०,२१)

इन भगवद्वचनोंके अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है कि सत्त्व-रजस्-तमस् की साम्यावस्था त्रिगुणमयी प्रकृति महासर्गके प्रारम्भमें गुणक्षोभके अनन्तर सत्त्व-रजस्-तमस् संज्ञक त्रिगुणरूपसे व्यक्त होती है। सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वरसे अधिष्ठित प्रकृतिके द्वारसे पञ्चभूतोंके सहित स्थावर-जङ्गम प्राणियोंकी उत्पत्ति-स्थिति-संहृति सम्भव है। घटादितुल्य व्यक्त जगत् का कारण “स्निग्धता” नामकी घटोत्पादिनी शक्तिसदृश अव्यक्त प्रकृति अर्थात् मायाशक्ति है। उसका आश्रय मृत्तिकातुल्य अक्षरसंज्ञक सनातन अव्यक्त है। सत्त्वगुण “उद्योतष्टम्भात्मक” प्रकाशात्मक ज्ञानशक्ति है। रजोगुण “उपष्टम्भात्मक” गतिशील क्रियाशक्ति है। तमोगुण “अवष्टम्भात्मक” द्रव्यशक्ति है। वैकारिक अर्थात् सात्त्विक अहम् से अधिदैवकी, तैजस अर्थात् राजस अहम् से करणात्मक अध्यात्मकी, तामस अहम् से पञ्चभूतोंकी अभिव्यक्ति साङ्ख्यनयानुसार मान्य है—

“सत्त्वं रजस्तम इति निर्गुणस्य गुणास्त्रयः। स्थिति सर्गनिरोधेषु गृहीता मायया विभोः॥
कार्यकारणकर्तृत्वे द्रव्यज्ञानक्रियाश्रयाः। बध्नन्ति नित्यदा मुक्तं मायिनं पुरुषं गुणाः॥” (श्रीमद्भागवत ०२.०५.१८,१९),
“महतस्तु विकुर्वाणाद्रजः सत्त्वोपबृंहितात्। तमः प्रधानस्त्वभवद् द्रव्यज्ञानक्रियात्मकः॥
सोऽहङ्कार इति प्रोक्तो विकुर्वन् समभूत् त्रिधा। वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेति यद्भिदा।
द्रव्यशक्तिःक्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिरितिप्रभो॥” (श्रीमद्भागवत ०२.०५.२३,२४)

उक्त रीतिसे सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वाधिष्ठान संवित् -शक्तिके समाश्रित मायाशक्ति है। मायाशक्तिके सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रभेद ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति तथा द्रव्यशक्तिका विलास सूक्ष्म तथा स्थूल कार्यप्रपञ्च है। मैटरस्थानापन्न पञ्चभूत, एलोक्ट्रोन आदि एनर्जीके स्थानापन्न मायाशक्तिके सात्त्विक-राजस तथा तामस प्रभेद तथा समाश्रयस्थानापन्न ब्रह्मकी “समीक्षा” “गीतोक्तरीतिसे” कर्त्तव्य है। समासशैलीमें सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वाधिष्ठान चित्तत्त्व है। ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति तथा द्रव्यशक्तिका समवेत स्वरूप समष्टिदृष्टिसे माया तथा व्यष्टिदृष्टिसे चित्त है। चित्तसमुद्भूत चैत्य(दृश्य)वर्ग है। **“चेतनं चित्तरिक्तं हि प्रत्यक्चेतनमुच्यते”** (सन्न्यासोपनिषत् ४५) “चित्तविहीन चेतन प्रत्यक्चेतन कहा जाता है।” श्रीभगवत्पाद शङ्कराचार्य-महाभाग के शब्दोंमें इस तथ्यका प्रकाश इस प्रकार है।—

“चित्तं चिदिति जानीयात्तकाररहितं यदा। तकारो विषयाध्यासो जपारागो यथामणौ॥” (सदाचारानुसन्धानम् ३१,३१.१/२)
“ ‘चित्त’ को चित्स्वरूप समझना चाहिए, जब वह तकार-रहित हो। तकार चैत्यसंज्ञक विषयका अध्यास है। उसीके योगसे चित्स्वरूप आत्मदेव चित्तरूपसे स्फुरित होता है। जैसे कि जपाकुसुमनिष्ठ लालिमाके योगसे स्वच्छ स्फटिककी रक्त स्फटिकरूपसे प्रतीति होती है॥”

~ पूज्यधर्महृदयमहाभाग श्रीऋग्वेदीय-पूर्वाम्नाय श्रीपुरुषोत्तमपुरीक्षेत्रस्थ-श्रीगोवर्द्धनमठ-उड्ड्यानपीठाधीश्वर
श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीनिश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराज

(साभार— स्वस्तिप्रकाशन-पुरीपीठका ११२वाँ पुष्प ‘गीताकासार्वभौमसिद्धान्त’ ०१.१८ पृ० ३९-४१)